Realism —

इस मत के अनुसार, जैसे कि पहले कहा जा चुका है कि बाह्य जगत् अपने दृश्यमान रूप में पूर्णतः सत्य है। यह वैसा ही है जैसा हमें दिखाई पड़ रहा है। हमारी चेतना से उसकी सत्ता में कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि हमें उसका ज्ञान न हो तो भी वह इसी प्रकार का होगा। कहने का तात्पर्य यह है कि उसकी सत्ता उसी प्रकार की रहती। भारतीय दर्शन में न्याय-वैशेषिक, पूर्वमीमांसा (कुमारिल तथा प्रभाकर दोनों के मत) सांख्य, माध्व, वेदान्त, जैन तथा चार्वाक वस्तुवादी हैं। बौद्धों में वैभाषिक मत को भी वस्तुवादी माना जाता है। यद्यपि ये सभी मत बाह्य संसार को सत्य मानते हैं किन्तु बाह्य सत्ता तथा हमारे द्वारा उसके ग्रहण के विषय में इनमें आन्तरिक मतभेद है। उदाहरणार्थ न्याय वैशेषिक बाह्य वस्तु का संवेदन इन्द्रिय तथा मन से होता है आत्मा में पहुँच जाता है और आत्मा उस वस्तु को उसके अपने रूप में ही ग्रहण करती है। सांख्य का मत इससे कुछ भिन्न है। सांख्य के अनुसार हमारी चेतना (प्रकृति) बाह्य वस्तु का संवेदन मन, अहंकार से होता हुआ

बुद्धि में पहुँचता है जो तदाकार परिणत हो जाती है, जिसे 'परिच्छेद्य बोध' कहते हैं। यहाँ हमारी चेतना ने वस्तु को सीधे ग्रहण नहीं किया अपितु उसके बिम्ब के माध्यम से ग्रहण किया। बाह्य सत्ता के विषय में वैभाषिक मत इन मतों से नितान्त भिन्न है। बौद्ध मत में क्योंकि सब कुछ क्षणिक है अतः किसी का किसी के द्वारा ग्रहण किया जाना संभव ही नहीं है। यहाँ तो प्रत्यक्ष का अर्थ होता है, रूप, चक्षु और चित्त के क्षणों का एक साथ होना। चार्वाक मत में अन्य मतों से एक मूलभूत अंतर दृष्टव्य है। अन्य मत चेतना को अभौतिक मानते हैं अर्थात् उनके अनुसार बाह्य संसार में स्थित भौतिक वस्तुओं में तथा चेतना में एक मौलिक अन्तर है किन्तु चार्वाक के अनुसार हमारी चेतना का भौतिक पदार्थों से कोई मौलिक अन्तर नहीं है अपितु चेतना भी, भौतिक पदार्थों के रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि अन्य गुणों की भाँति भौतिक पदार्थों से विकसित उसका एक गुण है। यह मत आधुनिक युग में विकसित कार्ल मार्क्स के भौतिकवाद (Materialism) के समान है।